Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-304-308

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 304-308

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

Corresponding Author :
डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

समकालीन हिंदी उपन्यासों में ट्रांसजेंडर जीवन का यथार्थ

शोध सार -: समकालीन दौर में हाशिएकृत समाज द्वारा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया जा रहा है। समाज में वे अपनी पहचान को स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। ऐसा ही एक तबका है ट्रांसजेंडरों का। स्त्री – पुरुष से इतर लिंग में जन्म लेने के कारण समाज से बहिष्कृत, दर-दर की ठोकरें खाने को अभिशप्त यह समाज अपनी पहचान को हासिल करने की दिशा में कूच कर रहा है। समाज के तानों और कटु वाणी से लहूलुहान होते हुए भी आज बड़ी शिद्दत के साथ समाज की मुख्यधारा के साथ जुड़ने में कामयाब हुए हैं। मिसाल के तौर पर शबनम मौसी, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मानोबीबंद्योपाध्याय, सिमरन, रिया दास, मोनिका दास, जिया दास, सिमरन, विद्या का नाम लिया जा सकता है। समकालीन हिंदी साहित्य के द्वारा इनकी पीड़ा, इनके खुरदरे यथार्थ को पर्त दर पर्त उघाड़ने का कार्य किया जा रहा है। परिणामस्वरूप समाज के नज़रिए में बदलाव आया है। समाज की मानसिकता में आये इस बदलाव का चित्रण समकालीन हिंदी उपन्यासों में हुआ है। माता–पिता अपने ट्रांसजेंडर बच्चे को अपनाने लगे हैं। अन्य बच्चों की तरह उन्हें स्कूल और कॉलेजों में तालीम दी जा रही है। पढ़–लिखकर वे भी समाज की मुख्यधारा से जुड़ने लगें हैं, अनाथ बच्चों को अपनाकर अपना जीवन सार्थक बनाने में लगे हुए हैं।

बीज शब्द -: हिजड़ा, गिरिया, कोती, चेला, गुरु, लिंग-पहचान, यौनिकता, बुचरा माता, निर्वाण।

विषय-वस्तु –: **यमदीप** - ट्रांसजेंडर पात्र को केंद्र में रखकर लिखा गया हिंदी का पहला उपन्यास है। इसकी लेखिका हैं नीरजा माधव। यह उपन्यास 2002 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास के केंद्र में नंदरानी उर्फ नाजबीबी नामक ट्रांसजेंडर है। उपन्यास में नाजबीबी के अलावा अन्य ट्रांसजेंडरों के संघर्ष, उनकी संवेदनशीलता को उघाड़ने का कार्य किया है। अपने परिवारवालों की बदनामी के चलते नाजबीबी अपना घर–बार छोड़कर ट्रांसजेंडरों की बस्ती में रहने के लिए चली आती है। नाजबीबी के पिता मेजर हैं। वे अपनी ट्रांसजेंडर बेटी नंदरानी को अपनाने के लिए तैयार हैं। नंदरानी के लिए सब कुछ बर्दाश्त करने को तैयार हैं, समाज से भिड़ने को भी राजी हैं। नंदरानी ने ही अपने आप घर छोड़ने का फैसला

लिया था। से भिड़ने को भी राजी हैं। नंदरानी ने ही अपने आप घर छोड़ने का फैसला लिया था। वह नहीं चाहती थी कि उसके घरवाले उसकी वजह से समाज के ताने सुने। इसलिए वह उन्हें बिना बताये चली आई थी। उसके माता–पिता उसे बस्ती में आकर मिलते हैं, उसे इस दयनीय हालत में रहता हुआ देखकर दुखी होते हैं और अपने साथ वापस ले जाना चाहते हैं। तब बस्ती के गुरु महताब गुरु द्वारा कहे गए शब्द समाज की मानसिकता को दर्शाते हैं –"आप इस बस्ती में नहीं रह सकते बाबूजी। और न ही अपनी बेटी को अपने साथ रख सकते हैं, दुनिया में बदनामी के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएँगे और न ही आपके परिवार के लोग। लूली – लंगड़ी होती वह, कानी होती तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे। इसलिए इसे आप उसके हाल पर छोड़ दीजिए यही उसका भाग्य था, यही बदा था सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लिया।"[1] ट्रांसजेंडर जीवन के कटु यथार्थ को महताब गुरु द्वारा यहाँ उभारा गया है। विस्थापन के दंश को सहते हुए सभी बस्ती में रहते हुए एक दूसरे के दुःख को बांटते हुए अपना गुजारा कर रहें हैं। अपने भीतर की इंसानियत को मिटने नहीं देतें –"'यमदीप' !उनके मन के कोनों – अंतरों की यात्रा कराता है – 'यमदीप'! केवल संत्रास ही नहीं, यह उपन्यास इस 'तीसरे लिंग' में बसी उस 'मानुष गंध' की भी पहचान कराता है जो प्राय: आम मनुष्य के लिए अनपहचानी ही रह जाती है। यही नहीं, यह उपन्यास इस 'तीसरे लिंग' की अदम्य जिजीविषा की कथा भी कहता है।"[2]

किन्नर कथा – यह महेंद्र भीष्म का उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष है 2011। जैतपुर के राजा जगत सिंह और रानी आभा सिंह को दो जुड़वे बच्चे पैदा होते हैं - रूपा और सोना। सोना एक ट्रांसजेंडर है, उसका जननांग अविकसित है। सच्चाई जानने पर राजा जगत सिंह को बड़ा धक्का लगता है और वे सोना को मारने के लिए अपने भरोसेमंद सेनापति पंचम सिंह के हवाले कर देते हैं। पंचम सिंह उसे मार नहीं पाते और ट्रांसजेंडर तारा के हवाले कर देते हैं। यहाँ से सोना का नया जन्म होता है। तारा ट्रांसजेंडर उसका नाम चंदा रखती है। मनीष चंदा से प्यार करने लगता है। उपन्यास में असली और नकली हिजड़ों के बीच के अंतर को भी चित्रित किया है। तारा ट्रांसजेंडर के संघर्ष को भी दर्शाया है। संपन्न घराने में जन्म लेने पर भी घरवालों की उपेक्षा तारा को झेलनी पड़ती है। तारा के ज़रिये लेखक ने ट्रांसजेंडरों की मानसिक व्यथा को यों प्रस्तुत किया है –"बचपन से आज तक बस अपने आप में दर्द पीते रहते हैं। दूसरों को हँसाते आए हैं, उनकी खुशियों में शरीक होते आए हैं, आशीष के सिवा कभी किसी को कुछ नहीं दिया, ईश्वर से बस एक शिकायत है। आखिर क्यों उसने हमें ऐसा बनाया? क्यों हिजड़ा होने का दण्ड दिया ? काश हम भी औरों की तरह स्त्री या पुरुष होते, हिजड़ा होना कितनी बड़ी सजा है, यह कोई हिजड़ा ही समझ सकता है, दूसरा कोई नहीं, कोई नहीं, कभी नहीं।"[3] दुःख का घूंट पीकर भी तारा दूसरों के आँसू पोंछते हैं। मातिन नामक स्त्री के लिए सहारा बनती है। रात में तारा की हत्या की जाती है। रूपा की शादी में चंदा को राजमहल से न्योता मिलता है। राजमहल पहुँचने पर वह अपने माता – पिता को पहचान लेती है। उसके पहचाने जाने पर उसका भाई उसपर गोली चलाता है, लेकिन चंदा बच जाती है। उसके माता – पिता उसे अपनाने को राजी हो जाते हैं। उसे ऑपरेशन के लिए कनाडा भेजा जाता है। कनाडा से वह पूरी स्त्री बनकर लौटती है, मनीष से शादी कर सुखी जीवन बिताती है। नयी सोच और आधुनिक तकनीकी विकास के ज़रिये सोना को ट्रांसजेंडर से औरत में तब्दील किया जाता है।

मैं पायल – इस उपन्यास के लेखक हैं – महेंद्र भीष्म। इस उपन्यास में लेखक ने ट्रांसजेंडर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। किसी भी ट्रांसजेंडर का जीवन सामान्य नहीं होता, उसे अपने जीवन में कई संघर्ष करने पड़ते हैं। लेखक ने पायल की व्यथा को यों उकेरा है, पायल खुद सोचती है– "क्षत्रियों के खानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसे सारा श्रेय मेरा ही हो ..... मैं हिजड़ा हूँ ....ठीक है, पर इसमें मेरा क्या कसूर ? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा बल्कि पिताजी का भी तो कोई दोष नहीं, फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों ?"[4] इस जीवनीपरक उपन्यास में हमें पायल सिंह की जीवनयात्रा, उनका परिवार, बचपन, समाज के लोगों द्वारा उन्हें सताया जाना, दुःख -दर्द को झेलते हुए आखिरकर उनका समस्त ट्रांसजेंडर समाज के लिए हीरो बनना आदि सत्य का उद्घाटन किया है।

गुलाम मंडी – निर्मला भुराडिया का उपन्यास है। यह 2014 में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत उपन्यास में उस गुलाम मंडी का बयान मिलता है जिसमें ट्रांसजेंडर एवं यौनकर्मियों का सौदा मिलता है। इस उपन्यास में दो कथाएं समान्तर रुप से चलती हैं – दुनिया भर से स्त्रियों की खरीद -फरोख्त करके उन्हें देह व्यापर में धकेल दिया जाता है। इसके दलाल भोली - भाली कन्याओं को रंगीन सपने दिखाकर, देश – विदेश में भेजकर वेश्यावृत्ति में फंसाकर मालामाल हो रहें हैं। वहीं उपन्यास में दूसरी ओर ट्रांसजेंडरों के दर्दनाक जीवन का वास्तविक चित्रण भी हुआ है–"'गुलाम मंडी', देह व्यापार हेतु की जाने वाली मानव तस्करी का वैश्विक आख्यान है। इसके समानांतर मुख्य कथा के सहायक कथा के रुप में उन किन्नरों के विमर्श को प्रस्तुत किया गया है जिसे आमतौर पर उभयलिंगी, हिजड़ा, तृतीय पंथी, यूनक, मौगा, खोजक, पावैया, खुसरा, जनखा, अनरावनी आदि विभिन्न संज्ञाओं से अभिहित किया जाता है। "5 कल्याणी, जानकी और अंगूरी जैसे ट्रांसजेंडर के ज़रिये उनकी समस्याओं को उद्घाटित कर समाज के खोखलेपन को प्रस्तुत किया है।

पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा – चित्र मुद्गल का उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष 2016 है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है विनोद उर्फ बिन्नी है। वह मुम्बई के एक खाते – पीते परिवार का है और जन्म से ही जननांग की विकृति का शिकार है। चौदह साल के होने पर उसे उसके घरवाले चंपाबाई के हवाले कर देते हैं। अपने जीवन में घटित घटनाओं को बिन्नी पत्र के ज़रिये अपनी माँ तक पहुँचाता है। ट्रांसजेंडर की टोली में पहुँचने पर भी वह अपनी पहचान बरकरार रखता है, इसके लिए उसे उनकी अश्लील गालियाँ भी सुननी पड़ती है –"उनके लात, घूंसे, थप्पड़ और कानों में गर्म तेल सि टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक -मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमे -सितारे वाली साड़ियाँ लपेट लिपिस्टिक लगा कानों में बुँदे लटकाने को।"[6] माँ के लिए उसका बच्चा बहरा–गूँगा, अपाहिज या ट्रांसजेंडर होने पर भी उसके प्रेम में तनिक भी कमी नहीं आती, क्योंकि नौ महीने बच्चे को वह अपने गर्भ में रखती है। सम्पूर्ण उपन्यास पत्रात्मक शैली में लिखा गया है।

ज़िंदगी 50 -50 – यह भगवंत अनमोल का उपन्यास है। कहानी दो स्तरों पर चलती है। एक तरफ लेखक अनमोल का परिवार है, जिसमें माँ, पत्नी अशिका और बेटा सूर्या है। दूसरी तरफ अनमोल की प्रेमिका अनाया और उसका अतीत है। पूर्वदीप्ती शैली में लिखा गया यह उपन्यास उत्तर प्रदेश, बेंगलुरु और मुंबई के ट्रांसजेंडर जीवन से रु -ब रु कराता है। अनमोल के बेटे सूर्या को ट्रांसजेंडर होने पर भी पारिवारिक और सामाजिक उपेक्षा नहीं झेलनी पड़ती। अनमोल अपने बेटे का साथ कदम-कदम पर देता है। उसे पढ़ा - लिखकर उसकी मंशा डिटेक्टिव बनने की है, उसे पूरी करता है। सूर्या अपने पिता का सहारा पाकर अपने मुकाम को हासिल करता है। वहीं दूसरी ओर अनमोल के बड़े भाई हर्षा को अपने पिता की उपेक्षा झेलनी पड़ती है। उसकी गलती न होने पर भी उसे हर बार उसे अपने पिता की मार खानी पड़ती और ताने सुनने पड़ते तब हर्षा सोचता है–"क्या समाज में मुझ जैसे लोगों को जीने का कोई हक नहीं ? वही समाज जिसका एक व्यक्ति मेरे साथ कुकृत्य करता है और उसका दोष भी मुझे दिया जाता है !वही समाज, जो अपने से अलग लोगों की इज्जत करना नहीं जानता। क्या यह सभ्य समाज है ?"[7] हर्षा की ये सोच समाज के खोखलेपन की ओर इशारा करते हैं। उपेक्षा के बावजूद भी वह अपने पिता की मदद ही करता है। ज़मीन -जायदाद के लिए कचहरी में मुकदमा चल रहा है। पैसे जुटाने के लिए हर्षा सेक्स वर्कर बनता है इसप्रकार पिता का साथ देता है। आखिरकार एड्स का शिकार होकर उसे आत्महत्या का रास्ता अपनाना पड़ता है। उपन्यास के ज़रिये लेखक ने नई पीढ़ी में आये बदलाव को उजाकर किया है कि आज की नई पीढ़ी इन्हें अपनाने को तैयार है, मात्र ट्रांसजेंडर होने के कारण इनकी उपेक्षा नहीं करते। अनमोल ऐसी ही पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास के संबंध में डॉ. मधु खराटे लिखते हैं– "उपन्यास की सफलता यही है कि आखिरकार अनमोल ने अपने किन्नर पुत्र को एक जिंदगी देकर सिद्ध किया है कि यदि किन्नरों के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि हो, उनके प्रति आत्मीय भाव हो तो वे भी सक्षम सिद्ध हो सकते हैं।"[8]

दरमियाना – सुभाष अखिल का बहुचर्चित उपन्यास

है। यह उपन्यास 2018 में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने ट्रांसजेंडरों के बारे में अपने अनुभव एवं विचार प्रस्तुत किये हैं। 'दरमियाना' शब्द इनके लिए प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द है।

मेरे हिस्से की धूप – नीना शर्मा द्वारा लिखा गया उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में ट्रांसजेंडर के जीवन की पीड़ा के साथ -साथ उपन्यास की प्रमुख पात्र मोनी के साहस और अदम्य जिजीविषा के साथ हर मुसीबतों का डटकर सामना करना उद्घाटित किया है। मोनी के पिता मोतीलाल और उसकी माँ उसकी उपेक्षा नहीं करते बल्कि हर पल मोनी का साथ देते हैं, बच्ची को ट्रांसजेंडर की टोली में भेजने को तैयार नहीं होते तब बच्ची को ले जाने के लिए आये ट्रांसजेंडर समाज की मानसिकता को यों उकेरते हैं –" देखो सेठ लोग कुत्ता बिल्ली भी पाल लेते है लेकिन हिजड़े को घर में रखना ..... इतनी तरक्की नहीं करी है तेरे इस समाज ने। ये समाज तुझे जीने नहीं देगा थोड़े दिन के ताने से ही ..... तेरा प्यार खतम हो जाएगा।"[9] माता -पिता को दुखी पाकर उन्हें बताये बिना वह ट्रांसजेंडरों के डेरे में चली जाती है। लेकिन वहाँ के हालातों से तंग आकर वह बबली ट्रांसजेंडर की मदद से वापस अपने घर लौट आती है। मोतीलाल की मृत्यु के बाद उनके व्यापर को आगे बढ़ाने में ही अपने जीवन का इतिश्री मानती है। उपन्यास के शीर्षक की तरह मोनी को उसके हिस्से की धूप चाहिए। उसका भी हक बनता है सम्मान से जीने का जो उसे सर्राफा बाज़ार में काम करने पर मिल ही जाता है।

अस्तित्व – गिरिजा भारती का उपन्यास है। यह 2018 में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास का कथानक एक मध्यवर्गीय परिवार के इर्द -गिर्द बुना गया है। विवाह के चार वर्ष बाद वर्मा जी एवं उनकी पत्नी सुधा को एक कन्या रत्न की प्राप्ति होती है। दुर्भाग्यवश वह एक ट्रांसजेंडर है। लेकिन प्रीत को घरवालों की उपेक्षा नहीं झेलनी पड़ती। माता -पिता का सहारा उसे मिलता है। प्रीत शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़े होने की काबिलियत हासिल करती है।

मंगलामुखी- यह डॉ लता अग्रवाल का उपन्यास है। उपन्यास में ट्रांसजेंडर गुरु शकुन्तला, शगुन नामक लड़की को आत्महत्या करने से बचाती है। उसके गर्भवती होने का पता चलने पर उसे अपने पास रखने का निर्णय लेती है, क्योंकि उसका प्रेमी उसे छोड़कर भाग गया है। समाज के डर से वह खुदखुशी करना चाहती है। लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय की टोली उसे बचा लेती है। यहाँ अमानवीयता पर ट्रांसजेंडर समुदाय की मानवीयता को लेखिका ने उजागर किया है जिन्हें केवल समाज दुत्कारता रहा है।

हाफमैन – इस उपन्यास के लेखक भुवनेश्वर उपाध्याय हैं। यह उपन्यास 2020 में प्रकाशित हुआ है। उपन्यास का प्रमुख पात्र अर्जुन है, जो कि एक ट्रांसजेंडर है। कथानक की शुरुआत अर्जुन के आई.ए.एस बनने के उपरांत की स्थिति से शुरु होती है। इसमें अर्जुन के जन्म लेने से लेकर उसके आई.ए.एस बनने तक झेले गए दंश, संघर्ष के साथ -साथ उसके आत्मविश्वास और कुछ कर गुजरने के जज्बे को चित्रित किया है। उपन्यास का अंत दुखांत नहीं है। अंत में अर्जुन एक बच्चे को गोद लेता है ताकि उसे एक सुनहरा भविष्य प्रदान कर सके।

अस्तित्व की तलाश में सिमरन – मोनिका देवी का उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष 2019 है। लेखिका ने अपने उपन्यास में सिमरन नामक ट्रांसजेंडर को मुख्य पात्र बनाया है जो आजीवन अपने अस्तित्व को तलाशती है। हर कहीं उसे शोषण ही झेलना पड़ता है। उसमें गजब की जिजीविषा है जिसकी बदौलत वह दर-दर की ठोकरें खाने पर भी हिम्मत नहीं हारती। वह समाज सेविका बन कुछ कर गुजरने की मंशा रखती है जिससे अपने अस्तित्व को समाज में बनाये रखने में कामयाब हो सके।

ए ज़िंदगी तुझे सलाम - हरभजन सिंह महरोत्रा इस उपन्यास के लेखक हैं। यह उपन्यास 2020 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के केंद्र में रोशनी उर्फ मधु नामक ट्रांसजेंडर है। एक पगली रोशनी को जन्म देती है। उसके मर जाने पर रूपा वाल्मीकि नामक सफाई कर्मचारी उसे गोद लेती है। लेकिन मुन्ना और मुबीन उसे चुरा लेते हैं। जब उन्हें उसके ट्रांसजेंडर होने का पता चलता है तब वे उसे रुखसार बीबी के हवाले कर देते हैं। रुखसार बीबी उसे निर्मला गुरु के डेरे में पहुँचाती है। रज्जो ट्रांसजेंडर उसे माँ का प्यार और दुलार देती है। दुर्घटना में रज्जो और निर्मला गुरु की मृत्यु होने पर रोशनी अनाथ हो जाती है। सुलताना के गुरु बनने पर वह तमाम नियंत्रण रोशनी पर लगाती है

और उसे धंधे पर जाने से उकसाती है। रोशनी ऐसे विपरीत हालातों से गुजरते हुए भी अपना हौसला नहीं हारती। अपने बुलंद मंसूबे और संघर्ष के द्वारा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का पद हासिल करती है।

तीसरी ताली – प्रदीप सौरभ का उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष है-2011। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने तृतीय लिंग की पीड़ा, उनके शोषण, समाज में उनके संघर्ष को उघाडा है। यह उपन्यास गे, लेस्बियन और ट्रांसजेंडर के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है–"प्रदीप सौरभ ने इसी दुनिया के उस तहखाने में झाँका है, जिसका अस्तित्व तो सब मानते हैं लेकिन जानते नहीं। यह उपन्यास उस समाज की कहानी है जिसे न तो जीने का अधिकार है न ही सभ्य समाज में रहने का। यह उपन्यास इसी हाशिये पर बसर हो रही जिंदगी की कहानी बयाँ करता है।"[10] विनीत उर्फ विनीता ट्रांसजेंडर इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है। विनीता गौतम साहब की बेटी है। उनके घर में कई सालों बाद एक बेटी का जन्म होता है। उसके ट्रांसजेंडर होने पर परिवारवाले दुखी होते हैं। वह अपने परिवारवालों के लिए बोझ नहीं बनती, ब्यूटीशन का कोर्स कर एक ब्यूटीपार्लर खोलती है। अपने पैरों पर खड़े होकर नाम कमाती है। दूसरी ओर निकिता ट्रांसजेंडर है। वह आनंदी की बेटी है। आनंदी गौतम साहब की पड़ोसन है। आनंदी अपनी बेटी निकिता को ट्रांसजेंडर की टोली में भेज देती है। वहाँ के हालातों से समझौता न कर पाने के कारण वह जिंदगी से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है। इनके आलावा मंजू ट्रांसजेंडर की दास्तान भी उपन्यास में चित्रित है।

मेरे होने में क्या बुराई है – रेनू बहल इस उपन्यास की लेखिका हैं। यह 2020 में प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास ट्रांसजेंडर शेखर के शेखर से शिखा बनने की दास्तान बयान करता है। घर से बेदखल किये जाने पर भी शेखर उर्फ शिखा अपने मंसूबे को हासिल करने में सफल होती है। शिखा के अलावा सितारा, पांचाली की दर्दनाक मौत को उघाड़कर इस सच्चाई को उकेरने का कार्य किया है कि इनकी मृत्यु होने पर पूछनेवाला कोई नहीं होता।

शिखंडी – इस उपन्यास की लेखिका शरद सिंह हैं। उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 2020 है। महाभारत की कथा को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है। काशीराज की पुत्री अम्बा भीष्म पितामह से प्रतिशोध लेने के लिए तीन जन्म लेती है। महाभारत युद्ध की विभीषिका भी उपन्यास में वर्णित है। शिखंडी द्वारा अपने प्रतिशोध की ज्वाला को जिलाए रखने, उसकी अदम्य जिजीविषा को भी लेखिका ने सम्पूर्ण उपन्यास के ज़रिये चित्रित किया है।

निष्कर्ष -: समाज में ट्रांसजेंडर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में हिंदी साहित्य ने अहम भूमिका निभाई है। हिंदी उपन्यासों में प्रमुख पात्र के रूप में इनकी छवि देखी जा सकती है। इनके संघर्ष को दर्शाकर रचनाकारों ने यह सन्देश दिया है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी टस से मस न होकर इन्होंने समाज में अपनी जो पहचान स्थापित की है वह काबिले तारीफ है। इसे नजरअंदाज न कर इनसे हमें सीख लेनी चाहिए। जहाँ आज इंसानियत खत्म होती जा रही है वहीं ये मानवीयता, सच्चाई, ईमानदारी के साथ कूच कर रहें हैं। इसे समकालीन हिंदी उपन्यासों के ज़रिये उघाडकर समाज में प्रस्तुत करने का कार्य किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. नीरजा माधव -यमदीप-पृ-93.
2. डॉ.एम.फीरोज खान – थर्ड जेंडर : कथा आलोचना -पृ:51
3. महेंद्र भीष्म – किन्नर कथा-पृ-66.
4. महेंद्र भीष्म –मैं पायल -पृ-37.
5. डॉ. एम. फीरोज खान–थर्ड जेंडर : कथा आलोचना -पृ-86.
6. चित्रा मुद्गल – पोस्ट बॉक्स नं. 203 – नाला सोपारा -पृ-9.
7. भगवंत अनमोल -जिंदगी 50-50–पृ-161.
8. डॉ.मधु खराटे – हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श – पृ-159.
9. डॉ. नीना शर्मा -मेरे हिस्से की धूप -पृ-97.
10. रामडगे गंगाधर पिराजी – साहित्य एवं समाज में किन्नर जीवन – पृ-108.

•